जी-7 वभिाजन की राह पर

संदर्भ

8-9 जून, 2018 को क्यूबेक, कनाडा में आयोजति हुए संगठति समूह G-7 की बैठक में अमेरकिा, ब्रटिेन, फ्राँस, जर्मनी, इटली, जापान और कनाडा अमेरकिी राष्ट्रपतडिोनाल्ड ट्रम्प के रुख के कारण वभिाजति और उलझन में दखिाई दयि। वश्वि व्यवस्था को नयिंत्रति करने के लयि इन सातों के बीच समझौता अब संकट की स्थतिमिें दखिाई दे रहा है क्योंकअिमेरकिी राष्ट्रपतट्रिंप द्वारा लंबे समय से इस समूह के नयिमों के साथ खलिवाड़ कयिा जा रहा है|

पछिले कुछ दशकों में समूह ने दुनयिा को क्या दयिा है?

- सामूहकि और व्यक्तगित रूप से यह समूह ज़्यादातर वकिासशील देशों के खर्च पर वकिसति हुआ है।
- वश्वि व्यापार संगठन (WTO) का उद्देश्य अपने प्रशासन में व्याप्त बाधाओं का समाधान करते हुए उभरते बाज़ारों को वश्वि पटल पर लाना है|
- अमेरकिा और यूरोपीय संघ (EU) ने अपने कृषबिाज़ारों के लयि प्रतस्पिर्द्धा की अनुमतदिेने से इनकार कर दयिा क्योंकउिन्होंने ब्राज़ील और भारत जैसे उभरते बाज़ारों पर दबाव डालने के लयि करों को कम करके आयात में कमी की है।
- इन देशों ने अपने प्रभाव और रुचकिो बनाए रखने के लयि गरीब देशों के बीच वभिाजन की स्थतिउित्पन्न की|
- वे चीन के असाधारण रूप से वनिर्िमाण के क्षेत्र में उभरने को लेकर बेहद चतिति थे, जो धीरे-धीरे उनकी क्षमताओं को आत्मसात करता जा रहा था।
- समूह की त्रुटपिूर्ण नीतयिों के कारण चीन पश्चमि में आइना दखिाने में कामयाब रहा।
- गरीब देशों की मदद करने की अपनी सभी प्रतबिद्धताओं को नज़रंदाज करते हुए जी-7 अभी भी लैटनि अमेरकिी और अफ्रीकी देशों को अपने उत्पादों के बाज़ार के रूप में देखना चाहता है।
- इसने वकिासशील देशों में औद्योगीकरण में वृद्धकिी संभावनाओं का उपहास उड़ाया है। चीन की वनिर्िमाण क्षमताओं को वकिसति करने वाले अफ्रीका या लैटनि अमेरकिा के दो या तीन देशों के प्रभाव को आसानी से समझा जा सकता है।
- चीन और भारत के उदय पर ये देश खुश नहीं होंगे। इसलयि, वे इन दोनों देशों के अतरिक्ति कुछ अन्य देशों को उभरता हुआ देखना पसंद नहीं करेंगे|
- वे पहले ही भारत और चीन पर अपना रुख स्पष्ट कर चुके हैं। घरेलू उत्पादन और वनिर्िमाण के प्रोत्साहन को लेकर यूरोपीय संघ भारत से परेशान है।
- भारत ने पूरी तरह से देश में नर्मिति कारों पर उच्च टैरफि लगाया है। भारत ने अपने घरेलू ऑटोमोबाइल उद्योग को वसि्तार देते हुए और इसे गहराई की ओर ले जाने के लयि प्रयास कर रहा है|
- भारत में बनाई गई कारें और इनके पार्ट्स दुनयिा भर में बेचे जाते हैं। यूरोपीय और अमेरकिी ऑटो कंपनयिों ने भारतीय बाज़ार में अपनी हस्सिेदारी सुनश्चिति करने तथा उनके उत्पादों से प्रतस्पिर्द्धा करने के लयि अरबों रुपए नविेश कयि हैं।
- अब भी, यूरोपीय संघ पूरी तरह से वहाँ नर्मिति कारों पर कम आयात शुल्क के लयि दबाव डालने की कोशशि कर रहा है। यूरोपीय संघ यह चाहता है कि भारत यूरोप में इस्तेमाल की जाने वाली कारें खरीदे।
- इसी तरह, अमेरकिा अपनी सौर-नर्िमाण क्षमताओं को बढ़ावा देने के प्रयासों के बारे में भारत को परेशान कर रहा है। उसे यह पसंद है कभिारत वनिर्िमाण की बजाय आयात करे।
- मई में अमेरकिा ने वभिन्नि योजनाओं के माध्यम से अपने नर्यिात को बढ़ावा देने के लयि भारत के खलिाफ मामला दर्ज कयिा है। चीन और भारत भी आपस में लड़ रहे हैं।
- भारत ने भी आयातति स्टील पर शुल्क बढ़ाने के लयि अमेरकिा के खलिाफ डब्ल्यूटीओ में मामला दर्ज कयिा है।

चीन का मज़बूत दृष्टकिोण

- चीन ने नश्चिति रूप से अपने दृष्टकिोण पर काफी मज़बूती दखिाई है। इसने जी-7 द्वारा नर्धारति नयिमों को मानने से इनकार कर दयिा है।
- भारत इसका वरिोध कर सकता है क्योंकचिीन की बेल्ट और रोड पहल उसी तरह का आर्थकि साम्राज्यवाद है जसि जी-7, वशिेष रूप से ब्रटिेन ने सदयिों से दुनयिा पर लगाया था।
- अब एशयिाई देश परपिक्व हो गए हैं, पश्चमिी बाज़ारों को समान नीतयिों का सामना करना पड़ रहा है जनिका उपयोग उन्होंने दुनयिा को नयिंत्रति करने के लए कयिा था।

क्या भारत, चीन और अन्य उभरते बाज़ार पश्चमिी देशों की कमजोरी का फायदा उठाएंगे?

- सवाल यह है कि क्या भारत, चीन और अन्य उभरते बाज़ार पश्चमिी देशों की कमज़ोरी का फायदा उठाने के लयि अब एक मज़बूत रणनीतितैयार कर सकते हैं?
- इसके लयि दो महत्त्वपूर्ण स्थतियिों की आवश्यकता होगी। पहली, चीन और अन्य उभरते बाज़ारों के बीच बेहतर संबंध। दूसरी, आर्थकि दग्गिजों के

साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिये अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाना।
- भारत को आंतरिक सुधारों की ज़रूरत है, जबकि चीन पहले से ही ऐसा करता आ रहा है। जनसंख्या का आकार पर्याप्त नहीं है।
- उदाहरण के लिये, भारत और चीन को अपनी न्यायिक और शैक्षणिक प्रणाली में सुधार करना है। आंतरिक शासन क्षमताओं के लिये गहरे संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता होती है।

G-20 व G-7 विभाजन की राह पर

- बहुपक्षीय स्तर पर जी-20 समूह, जी-7 से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।
- कोई भी समूह जो अर्थव्यवस्था या सुरक्षा पर वैश्विक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास करता है तो वह सफल नहीं होगा जब तक कि इसमें ब्रिक्स देशों को शामिल न किया जाए|
- जी-7 की तरह जी-20 भी गतिशीलता बनाए रखने में सक्षम नहीं है क्योंकि पुरानी और उभरती शक्तियों के बीच एक स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है।
- शंघाई सहयोग संगठन और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे फोरम वैश्विक नेतृत्व की नई संभावनाओं को इंगित करते हैं क्योंकि यहाँ एशियाई देश प्रभावशाली हैं।
- पश्चिम में तकरार का माहौल दिखाई दे रहा है जिसे रूस चुपचाप देख रहा है और चीन तेज़ी के साथ आगे बढ़ रहा है, ऐसे में एशिया के उदय के लिये केंद्रित समन्वय की ज़रूरत है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/the-dividers-are-divided